सत्यम भारती

एक सांचे में ढल गया वो तो
अपने भीतर ही गल गया वो तो

आस मरहम की जिससे रक्खी थी
नून ज़ख्मों पे मल गया वो तो

एक सूरज तो था मगर देखो
शाम होते ही ढल गया वो तो

कैसे कोई यकीन उस पे करे
अपने वादों से टल गया वो तो

बात छोटी-सी थी मगर फ़िर भी
बच्चे जैसा मचल गया वो तो

यह कब कहा आसान है
जग जंग का मैदान है

छंट जायेगा अंधियारा यह
सूरज यहाँ द्युतिमान है

हिन्दी में हैं तुलसी बसे
हिन्दी में ही रसखान है

कह दो हमारा हौसला
मन में दबा तूफ़ान है

जोड़ा है दिल, बांटा नहीं
यह देश हिन्दुस्तान है

सच है तीखी ज़बान रखता हूँ
मैं हथेली पे जान रखता हूँ

वक़्त को बांचना ज़रूरी है
इक मुकम्मल बयान रखता हूँ

ठोकरों से हूँ कब मैं घबराया
सीख का हर निशान रखता हूँ

लौट आएंगे वे ख़ुशी के दिन
हौसले की उड़ान रखता हूँ

हां, मुझे मेरी धरती प्यारी है
फिर भी मैं आसमान रखता हूँ

देखा मैंने नकली चेहरा चेहरे पर
सबकुछ ही था कितना अच्छा चेहरे पर

चेहरे से मुस्कान हटा कर देखो तुम
मिल जाएगा सच्चा-झूठा चेहरे पर

मैंने जबसे उसको देखा सपनों में
दिखता है इक रूप सुनहरा चेहरे पर

अक्षर-अक्षर सत्य दिखाई देता है
सुख-दुख सबकुछ आकर ठहरा चेहरे पर

पूरा ही है चांद तुम्हारा यह चेहरा
आढ़ो मत तुम कोई दुखड़ा चेहरे पर

प्रवक्ता (हिंदी साहित्य)
राजकीय मॉडल इंटर कॉलेज
नैथला हसनपुर, बुलंदशहर

 ISSN:2583-8849